

द्वि-वस्तु समस्या मि HkkDrk ds 0; ogkj dk fl) kUr

मि HkkDrk ds vf/keku

उपभोक्ता अपने लिए उपलब्ध सभी बंडलों (संयोगों) में से अपने उपभोग बंडल का चयन अपनी रुचि तथा अधिमान के अनुसार बजट सेट के बंडलों के आधार पर करता है। यहां यह मान लिया जाता है कि बंडलों के सेट के विषय में उसके अधिमान स्पष्ट हैं और वह उनमें तुलना कर सकता है। साथ ही बंडलों का श्रेणीकरण भी कर सकता है।

, dfn"V vf/keku

किसी उपभोक्ता का अधिमान केवल उस स्थिति में एकदिष्ट होता है जब किन्हीं दो बंडलों के बीच उस बंडल को पसंद करता है जिसमें दूसरे बंडल की तुलना में कम से कम किसी एक वस्तु की संख्या अधिक हो तथा दूसरी वस्तु की संख्या भी कम न हो।

माना उपभोक्ता के लिए दो बंडल(5,6) तथा (6,6) उपलब्ध हैं तो उपभोक्ता बंडल (5,6) की तुलना में बंडल (6,6) को अधिक पसंद करेगा, क्योंकि इसमें पहली वस्तु एक इकाई अधिक है तथा दूसरी वस्तु की मात्रा में भी कोई कमी नहीं आई है वह दोनों बंडलों में समान मात्रा में (6,6) उपलब्ध है। उपभोक्ता की इस प्राथमिकता को ही एकदिष्ट अधिमान कहते हैं।

mnkl hurk oØ@rVLFkrk oØ@vuf/keku oØ

उदासीनता वक्र वह वक्र है जिसके विभिन्न बिन्दुओं पर वस्तुओं के ऐसे संयोग बनते हैं जिनसे उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त होती है। अतः वह ऐसे विभिन्न संयोगों के प्रति उदासीन रहता है।

i kØ bLFke ds vuq kj& "यह (उदासीनता वक्र) मात्राओं के उन जोड़ों को प्रदर्शित करने वाले बिन्दुओं का पथ होता है जिसके प्रति उपभोक्ता तटस्थ अथवा उदासीन रहता है।"

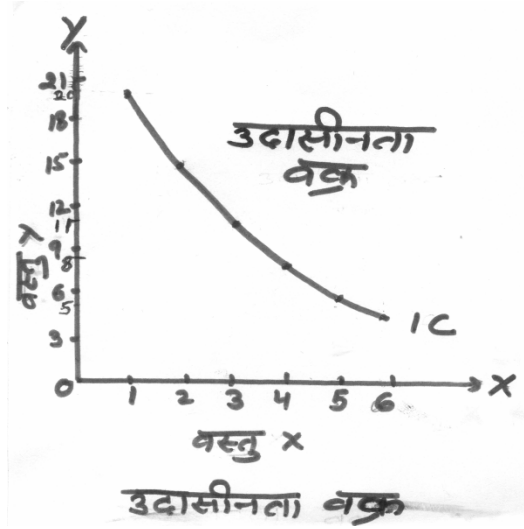
उदासीनता वक्र का निर्माण जिस तालिका के आधार पर किया जाता है उसे उदासीनता तालिका या अनुसूची कहते हैं।

उदासीनता तालिका वह अनुसूची है जिसमें दो वस्तुओं के उन वैकल्पिक संयोगों को दिखाया जाता है जो उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्रदान करने के कारण समान रूप से स्वीकार्य होते हैं।

mnkl hurk vuq ph

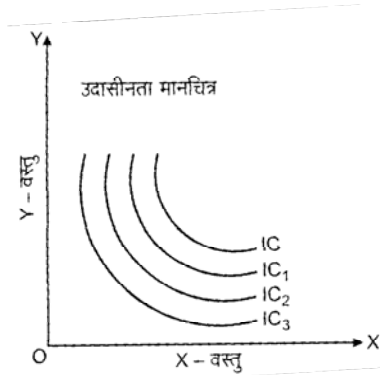
संयोग / बंडल	वस्तु x	वस्तु y
A	1	20
B	2	15
C	3	11
D	4	8
E	5	6
F	6	5

उदासीनता अनुसूची के आधार पर जो वक्र तैयार होता है उसे उदासीनता वक्र कहते हैं।



mnkl hurk ekufp=

एक उदासीनता वक्र सन्तुष्टि के निश्चित स्तर को बताता है। यदि भिन्न-भिन्न संतुष्टि स्तरों को बताने वाले विभिन्न उदासीनता वक्रों को एक साथ प्रदर्शित किया जाए तो उसे उदासीनता मानचित्र कहते हैं।



, d mnkl hurk ekufp= e&

- 1- किसी एक तटस्थता वक्र पर स्थित सभी बिन्दु उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्रदान करते हैं।
- 2- यदि दो बिन्दु दो भिन्न वक्रों पर स्थित हैं तो उनसे मिलने वाली सन्तुष्टि समान न होकर अलग-अलग होगी।
- 3- जो तटस्थता वक्र मूल बिन्दु 0 से जितना दूर होगा, उससे मिलने वाली संतुष्टि उतनी ही अधिक होगी।

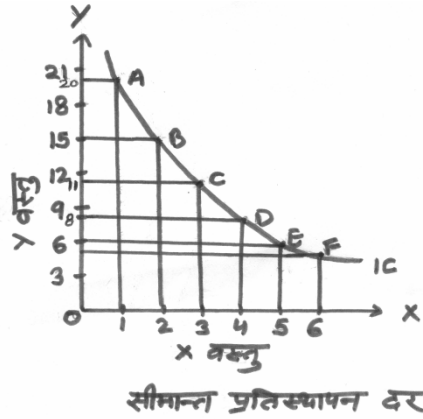
Indifference Curve

एक उदासीनता वक्र पर दो वस्तुओं X तथा y के संयोग में यदि एक वस्तु (X) की मात्रा बढ़ाई जाती है तो दूसरी वस्तु y की मात्रा घटानी होगी तभी उसे समान संतुष्टि प्राप्त होगी और वह अपने उदासीनता वक्र पर बना रहेगा।

अतः X की y के लिए सीमान्त प्रतिस्थापन दर y की वह मात्रा है जो कि X की एक अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने की प्रतिक्रिया स्वरूप घटाई जाती है ताकि उपभोक्ता का पहले के समान संतुष्टि का स्तर बना रहे।

Indifference Curve

संयोग/बंडल	वस्तु X	वस्तु y	y के लिए X की प्रतिस्थापन दर MRS_{xy}
A	1	20	—
B	2	15	5:1
C	3	11	4:1
D	4	8	3:1
E	5	6	2:1
F	6	5	1:1



उपभोक्ता अपने उदासीनता वक्र पर जब एक वस्तु X की एक इकाई को बढ़ाना चाहता है तो उसे y वस्तु की कुछ इकाईयों का त्याग करना पड़ता है परंतु जब वह उत्तरोत्तर X की एक इकाई में वृद्धि करता है तो y के लिए त्यागे जाने वाली मात्रा में क्रमशः कमी आती जाती है, इसे ह्रासमान सीमान्त प्रतिस्थापन दर कहते हैं। उपर्युक्त तालिका तथा रेखा चित्र के अनुसार उपभोक्ता सर्वप्रथम X की 1 तथा y की 20 इकाईयों के संयोग से संतुष्ट है।

यदि वह वस्तु X की 1 अतिरिक्त इकाई प्राप्त करना चाहता है तो उसे y वस्तु की 5 इकाईयों का त्याग करना होगा ताकि उसका संतोष बना रहे। यहां X की y के लिए सीमान्त प्रतिस्थापन दर 5:1 हुई।

अब यदि वह X वस्तु की 1 और इकाई बढ़ाता है तो उसे y की 4 इकाईयां त्यागनी होंगी। अब x की y के लिए सीमान्त प्रतिस्थापन दर 4:1 हुई।

इसी प्रकार प्रत्येक बार X वस्तु की मात्रा बढ़ाने के लिए y वस्तु की त्यागी जाने वाली मात्रा में क्रमशः कमी आती जाती है इसे ही हासमान सीमान्त प्रतिस्थापन दर कहते हैं।

सूत्र रूप में y के लिए x की सीमान्त प्रतिस्थापन दर $MRS_{xy} = \frac{y \text{ में परिवर्तन}}{x \text{ में परिवर्तन}}$

उदासीनता वक्र

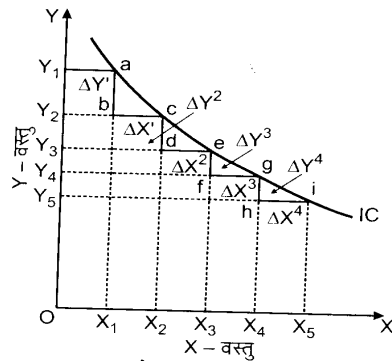
- 1- उदासीनता वक्र दाहिनी ओर नीचे को झुकता हुआ होता है।
- 2- उदासीनता वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होते हैं।
- 3- उदासीनता वक्र किसी भी अक्ष को स्पर्श नहीं करते।
- 4- उदासीनता वक्र एक दूसरे को नहीं काटते।
- 5- उदासीनता वक्र का एक दूसरे के समान्तर होना आवश्यक नहीं।
- 6- उदासीनता वक्र उपयोगिता की मात्रात्मक माप नहीं बताते।
- 7- उदासीनता वक्र मूल बिन्दु से जितना दूर होता है उतने ही बड़े बंडलों को दर्शाता है।

उपभोक्ता का व्यवहार

- 1- उपभोक्ता का व्यवहार विवेकपूर्ण है। अर्थात् वह अपने सीमित आय से अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करने के लिए सदैव प्रयत्नशील है।
- 2- उपभोक्ता प्राथमिकताओं के आधार पर बता सकता है कि वस्तुओं के किस संयोग से अन्य संयोगों की अपेक्षा अधिक संतुष्टि प्राप्त होगी।
- 3- उपभोक्ता की रुचि किसी एक वस्तु में न होकर विविध वस्तुओं के विभिन्न संयोगों में होती है।
- 4- उपभोक्ता सीमान्त प्रतिस्थापन दर को जानने की पूरी क्षमता रखता है।
- 5- उपभोग की जाने वाली वस्तुओं में एकरूपता पायी जाती है तथा उन्हें छोटी-छोटी इकाइयों में बांटा जा सकता है।

उदासीनता वक्र पर स्थित उपभोक्ता

किसी एक उदासीनता वक्र पर स्थित उपभोक्ता जब किसी वस्तु की मात्रा में वृद्धि करता है तो सीमान्त प्रतिस्थापन दर के नियम के कारण दूसरी वस्तु की मात्रा में कमी करना अनिवार्य हो जाता है। ऐसा करने पर ही वह अपने उदासीनता वक्र पर बना रह सकता है। इसी कारण से वक्र रेखा मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होती है।



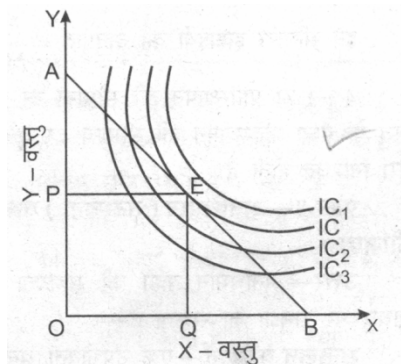
रेखाचित्र में X वस्तु की मात्रा में X_1 से X_2 की वृद्धि करने के लिये वस्तु Y की मात्रा में Y_1 से Y_2 की कमी करनी होगी तभी वह अपने उदासीनता वक्र में बना रह सकता है। इसी प्रकार X की प्रत्येक इकाई को Y की घटती हुई मात्रा के द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है जिसके कारण उदासीनता वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होते हैं।

उदासीनता वक्र की अवस्था में तब होता है जब वह अपनी सीमित आय से

वस्तुओं को उनकी दी गयी कीमतों पर खरीदकर अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है। उपभोक्ता की कीमत रेखा उसकी आय एवं उपभोग वस्तुओं की कीमतों से निर्धारित होती है। कीमत रेखा के साथ उपभोक्ता ऊँचे से ऊँचे उदासीनता वक्र तक पहुंचने का प्रयास करता है।

उदासीनता वक्र की अवस्था में तब होता है जब वह अपनी सीमित आय से

- 1- उसकी कीमत रेखा तटस्थता वक्र को स्पर्श करे।
- 2- दो वस्तुओं की सीमान्त प्रतिस्थापन दर = उनका कीमत अनुपात।
- 3- तटस्थता वक्र रेखा मूल बिन्दु के प्रति उन्नतोदर हो।



उदासीनता वक्र की अवस्था में तब होता है जब वह अपनी सीमित आय से

ikhe 'krz ds vuq kj उदासीनता वक्र कीमत रेखा को E बिन्दु पर स्पर्श करता है। अतः वह E बिन्दु पर संतुलन में होगा।

ni jh 'krz ds vuq kj E बिन्दु पर ही उदासीनता वक्र रेखा का ढाल (सीमान्त प्रतिस्थापन दर के कारण) उसकी कीमत रेखा के ढाल के बराबर है। कीमत रेखा का ढाल दो वस्तुओं के कीमत अनुपात को व्यक्त करता है अर्थात्

$$\frac{\text{xवस्तु की मात्रा}}{\text{yवस्तु की मात्रा}} = \frac{OB}{OA}$$

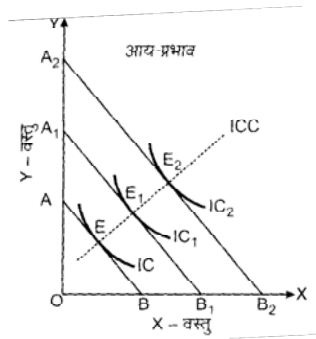
rhl jh 'krz ds vuq kj E बिन्दु पर तटस्थता वक्र मूल बिन्दु के प्रति उन्नतोदर है।

अतः उपभोक्ता उदासीनता वक्र के E बिन्दु पर ही संतुलन में होगा।

mi HkkDrk l rgyu ij vk; dk i Hkko

यदि वस्तु की कीमतें स्थिर रहें तथा उपभोक्ता की आय में परिवर्तन हो जाए तो आय में होने वाले परिवर्तन का उपभोक्ता की संतुष्टि पर जो प्रभाव पड़ता है वह आय प्रभाव कहलाता है।

आय में वृद्धि होने पर उपभोक्ता संतुष्टि के उच्च स्तर को प्राप्त करने में समर्थ होता है तथा ऊँचे उदासीनता वक्र पर संतुलन स्थापित होता है। वहीं आय में कमी होने पर उपभोक्ता का संतुष्टि का स्तर गिरता है और निम्न उदासीनता वक्र पर संतुलन स्थापित होता है।



मि HkkDrk ds l Uryu ij vk; dk i Hkko

रेखा चित्र में उपभोक्ता सर्वप्रथम A_1, B_1 कीमत रेखा पर है जिसे उदासीनता वक्र IC_1 बिन्दु E_1 पर स्पर्श करता है। अतः वह E_1 बिन्दु पर संतुलन में होगा। अब यदि उपभोक्ता की आय में वृद्धि हो जाए और वह A_2, B_2 कीमत रेखा पर आ जाए तब उसे एक उच्च उदासीनता वक्र IC_2 बिन्दु E_2 पर स्पर्श करता है जो पहले से अधिक संतुष्टि को दर्शाता है। परंतु यदि उपभोक्ता की आय कम हो जाए तो वह AB कीमत रेखा पर आ जाएगा और एक निम्न उदासीनता वक्र IC उसकी कीमत रेखा को E बिन्दु पर स्पर्श करेगा जो उसको पहले की तुलना में कम उपयोगिता प्रदान करता है।

यदि वस्तुओं की कीमतें स्थिर रहें तो उपभोक्ता की आय में वृद्धि होने पर वह अधिक संतुष्टि प्राप्त करता है और ऊँचे उदासीनता वक्र पर पहुंच जाता है। वहीं यदि उसकी आय में कमी हो जाए तो उसकी संतुष्टि में कमी आती है और वह निम्न उदासीनता वक्र पर आ जाता है।

vfry?kq mRrjh; i t u&

- प्रश्न 1— उदासीनता वक्र किसे कहते हैं?
- प्रश्न 2— एक दिष्ट अधिमान से क्या आशय है?
- प्रश्न 3— सीमान्त प्रतिस्थापन दर का अर्थ बताइए?
- प्रश्न 4— उदासीनता मानचित्र किसे कहते हैं?
- प्रश्न 5— सीमान्त प्रतिस्थापन दर का सूत्र लिखिए?

y?kq mRrjh; i t u&

- प्रश्न 1— उदासीनता मानचित्र की विशेषताएँ बताइये?
- प्रश्न 2— उदासीनता वक्र की विशेषताएँ बताइये?
- प्रश्न 3— उदासीनता वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होते हैं, कारण बताइये?

nh?kz mRrjh; i t u

- प्रश्न 1— तटस्थता वक्र की सहायता से उपभोक्ता के संतुलन की व्याख्या कीजिये?
- प्रश्न 2— उदासीनता वक्र रेखा क्या है? तालिका व रेखाचित्र की सहायता से समझाइये?
- प्रश्न 3— उपभोक्ता के संतुलन पर आय प्रभाव को उदासीनता वक्र द्वारा दर्शाइये?

mi ; kfxrk

किसी वस्तु या सेवा में निहित आवश्यकता पूर्ति की शक्ति को उपयोगिता कहते हैं।
i k0 ok?k के अनुसार, "अर्थशास्त्री के लिए उपयोगिता मानवीय आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने की क्षमता है।"

mi ; kfxrk dk LoHkko ¼fo' ks'krk, W ; k y{k.k.½

1& mi ; kfxrk , d veRkz /kkj .kk g& उपयोगिता एक अमूर्त धारणा है जिसे केवल अनुभव किया जा सकता है, इसे न हम देख सकते हैं और न ही छू सकते हैं।

2& mi ; kfxrk I ki f{k d gkrh gS – किसी भी वस्तु की उपयोगिता एक ही व्यक्ति के लिए समय तथा परिस्थितियों के साथ बदलती है। उदाहरण के लिए पंखा गर्मी में उपयोगी है परंतु सर्दियों में यह उपयोगी नहीं है।

3& mi ; kfxrk ykHknk; d rFkk gkfudkj d nkuuka gkrh g& उपयोगिता का गुण लाभदायक तथा हानिकारक दोनों प्रकार की वस्तुओं में होता है। जैसे— दूध, घी लाभदायक वस्तुएं हैं तथा शराब, अफीम जैसी वस्तुएं हानिकारक उपयोगिता देती हैं।

4& mi ; kfxrk oLrø r u gkdj vkRexr gkrh g& उपयोगिता वस्तु का आंतरिक गुण नहीं होता यह व्यक्ति विशेष की इच्छा की तीव्रता, रुचि, आदत आदि परिस्थितियों पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए एक प्यासे व्यक्ति के लिए पानी उपयोगी है किन्तु दूसरे व्यक्ति के लिए जो प्यासा नहीं है पानी उपयोगी नहीं है।

5& mi ; kfxrk ufrdrk I s vi Hkkfor gkrh g& उपयोगिता पर नैतिकता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। विभिन्न मानवीय स्वभाव में किसी व्यक्ति को चोरी अथवा शराब से भी उपयोगिता प्राप्त हो सकती है।

mi ; kfxrk ds i ðkj

उपयोगिता दो प्रकार की होती है—

1— कुल उपयोगिता

2— सीमान्त उपयोगिता

1& dy mi ; kfxrk& उपभोग की इकाइयों से कुल मिलाकर जो उपयोगिता प्राप्त होती है वही कुल उपयोगिता कहलाती है। दूसरे शब्दों में किसी वस्तु की समस्त इकाइयों से प्राप्त उपयोगिता के योग को कुल उपयोगिता कहते हैं।

कुल उपयोगिता =सीमांत इकाइयों का योग

$$TU = \sum MU$$

खोलरुq dh bdkb; kW	i klr mi ; kfxrk	dy mi ; kfxrk	
1	25	25	} कुल उपयोगिता बढ़ती हुई
2	20	45	
3	14	59	
4	9	68	
5	5	73	
6	0	73	कुल उपयोगिता स्थिर
7	-5	68	कुल उपयोगिता में कमी

सारणी के अनुसार उपयोगिता की तीन अवस्थाएँ दिखाई दे रही हैं।

कुल उपयोगिता भी बढ़ती जाती है। सारणी के अनुसार पांचवीं इकाई के उपभोग तक कुल उपयोगिता घटती दर से बढ़ रही है।

जिस बिन्दु पर कुल उपयोगिता का बढ़ना रुक जाता है उसे पूर्ण संतुष्टि का बिन्दु कहते हैं। छठी इकाई के उपभोग पर पूर्ण संतुष्टि का बिन्दु है यहाँ कुल उपयोगिता स्थिर हो गयी है।

पूर्ण संतुष्टि के बिन्दु के बाद भी यदि उपभोग जारी रखा जाय तो इस अवस्था में कुल उपयोगिता घटना प्रारम्भ हो गयी है।

सीमान्त उपयोगिता

वस्तु की अंतिम इकाई से प्राप्त उपयोगिता को सीमान्त उपयोगिता कहते हैं।

वस्तु की किसी मात्रा की सीमान्त उपयोगिता कुल उपयोगिता में वह वृद्धि है जो उपभोग की एक इकाई के परिणामस्वरूप प्राप्त होती है।

के अनुसार— “सीमान्त उपयोगिता उस अतिरिक्त उपयोगिता को बताती है जो वस्तु की एक अन्तिम अतिरिक्त इकाई से प्राप्त होती है।”

$$MU_N = TU_N - TU_{(N-1)}$$

MU_N = Nवीं इकाई से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता

TU_N = N इकाई से प्राप्त कुल उपयोगिता

$TU_{(N-1)}$ = N-1 इकाइयों से प्राप्त कुल उपयोगिता

1. सीमान्त उपयोगिता तीन प्रकार की होती है।

1. धनात्मक सीमान्त उपयोगिता जब किसी वस्तु के उपभोग से उपभोक्ता को कुछ उपयोगिता प्राप्त होती है तो उसे धनात्मक सीमान्त उपयोगिता कहते हैं।

2. शून्य सीमान्त उपयोगिता जब किसी वस्तु के उपभोग से उपभोक्ता को न तो संतुष्टि मिलती है और न ही असंतुष्टि। तब ये अवस्था शून्य सीमान्त उपयोगिता कहलाती है।

3. ऋणात्मक सीमान्त उपयोगिता जब किसी वस्तु के उपभोग से उपभोक्ता को अनुपयोगिता मिलती है तो इस अवस्था को ऋणात्मक सीमान्त उपयोगिता कहते हैं।

सीमान्त उपयोगिता

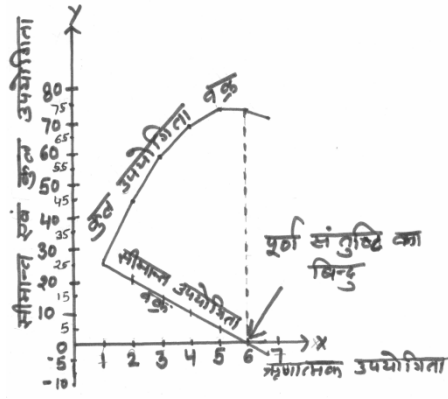
उपभोग की इकाई	सीमान्त उपयोगिता
1	25
2	20
3	14
4	9
5	5
6	0
7	-5

उपरोक्त सारणी में धनात्मक, शून्य तथा ऋणात्मक उपयोगिताएं प्रदर्शित की गई हैं। पहली इकाई से 5वीं इकाई तक उपभोग करने पर उपभोक्ता को धनात्मक उपयोगिता प्राप्त होती है। इसके बाद यदि वह 6ठीं इकाई का उपभोग करता है तो उसे 0 उपयोगिता प्राप्त होती है। यदि इसके बाद भी वह उपभोग जारी रखे तो उसे 7 वीं इकाई से ऋणात्मक उपयोगिता प्राप्त होती है।

सीमान्त उपयोगिता एवं कुल उपयोगिता

सीमान्त उपयोगिता एवं कुल उपयोगिता में पारस्परिक सम्बन्ध इस प्रकार है—

- 1— जब तक सीमान्त उपयोगिता धनात्मक होती है कुल उपयोगिता बढ़ती जाती है। कुल उपयोगिता की यह वृद्धि घटती हुई दर से होती है।
- 2— सीमान्त उपयोगिता के शून्य होने पर कुल उपयोगिता अधिकतम होती है।
- 3— यदि पूर्ण संतुष्टि के बाद भी उपभोग की क्रिया जारी रहे तो सीमान्त उपयोगिता ऋणात्मक हो जाती है तथा कुल उपयोगिता घटने लगती है।



mi Hkksx dh bdkb; kW

रेखाचित्र में उपभोग की 5वीं इकाई तक सीमान्त उपयोगिता में कमी आती है लेकिन कुल उपयोगिता में वृद्धि होती है। 6ठीं इकाई पर सीमान्त उपयोगिता 0 और कुल उपयोगिता अधिकतम है। 7वीं इकाई में सीमान्त उपयोगिता ऋणात्मक है तथा कुल उपयोगिता में कमी आने लगती है।

I hekUr mi ; kfXrk âkl fu; e

किसी वस्तु की विभिन्न इकाइयों का उपभोग करने पर उपभोक्ता को उससे प्राप्त होने वाली उपयोगिता प्रत्येक अगली इकाई के उपभोग के साथ घटती जाती है। इसे ही सीमान्त उपयोगिता का ह्रास होना कहते हैं। यदि अन्य बातें समान रहें तो वस्तु की प्रत्येक इकाई अपनी पूर्व इकाई से कम उपयोगिता प्रदान करती है।

ek'kly के अनुसार— “किसी व्यक्ति के पास वस्तु विशेष के स्टॉक में एक दी हुई मात्रा में वृद्धि होने पर उसे जो अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है वह स्टॉक में होने वाली प्रत्येक वृद्धि के साथ घटता जाता है।”

mNkgj .k& माना एक व्यक्ति रोटी की विभिन्न इकाइयों का उपभोग करता है। पहली इकाई से उसे 8 इकाई के बराबर सीमान्त उपयोगिता प्राप्त होती है। दूसरी इकाई के उपभोग से उसे 7 इकाई के बराबर सीमान्त उपयोगिता प्राप्त होती है। इसी प्रकार प्रत्येक अगली इकाई के उपभोग से प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिता क्रमशः घटती जाती है। 6ठी इकाई का उपभोग करने पर प्राप्त होने वाली उपयोगिता 0 हो जाती है। यह पूर्ण संतुष्टि का बिन्दु है। इसके बाद भी यदि उपभोग जारी रखा जाए तो उसे 7वीं इकाई से ऋणात्मक उपयोगिता प्राप्त होती है।

jksh dh bdkb; kW	iklr I hekUr mi ; kfXrk/bdkb; ka e½	dy mi ; kfXrk/bdkb; ka e½
1	8	8
2	7	15
3	5	20
4	3	23
5	1	24
6	0 शून्य सीमान्त उपयोगिता	24 पूर्ण संतुष्टि का बिन्दु
7	-5 घटती सीमान्त उपयोगिता	22 ऋणात्मक कुल उपयोगिता

सारणी में रोटी की प्रत्येक इकाई के प्रयोग से प्राप्त होने वाली उपयोगिता घटती जा रही है इसे ही सीमान्त उपयोगिता का ह्रास होना कहते हैं।

I hekUr mi ; kfxrk dh I hek, & यह निम्नलिखित दशाओं में लागू नहीं होता है—

1. जब इकाइयों के उपभोग के बीच समय अन्तराल आ जाये।
2. जब उपभोग की इकाइयां बहुत छोटी हैं।
3. जब इच्छा दुर्लभ वस्तुओं, मुद्रा आदि के संचय की हों।
4. जब उपभोग प्रारम्भिक अवस्था में हो।
5. जब उपभोक्ता सामान्य मानसिक स्थिति में न हो।

I e&l hekURk mi ; kfxrk fu; e&

यह नियम प्रख्यात अर्थशास्त्री एच०एच० गोसेन द्वारा प्रतिपादित किया गया। उनके अनुसार यदि समस्त आवश्यकताओं को तृप्ति बिन्दु तक संतुष्ट करना संभव हो तो अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि विभिन्न आवश्यकताओं की संतुष्टि को उसी बिन्दु पर रोक दिया जाए जहां उसकी तीव्रता समान हो चुकी है।

i kO ek'kly ds vuq kj— “यदि किसी व्यक्ति के पास कोई ऐसी वस्तु है, जिसका प्रयोग वह अनेक प्रकार से कर सकता है तो वह उस वस्तु को उन विभिन्न प्रयोगों के बीच इस प्रकार वितरित करेगा कि सभी प्रयोगों में उस वस्तु की सीमान्त उपयोगिता समान रहे।”

i kO tOvkjOfgDI के अनुसार— “उपयोगिता तब अधिकतम होगी, जबकि प्रत्येक दशा में व्यय की सीमान्त इकाई बराबर—बराबर उपयोगिता प्राप्त करें।”

I e&l hekURk mi ; kfxrk dh ekU; rk, W

- 1— उपभोक्ता विवेकशील प्राणी है।
- 2— उपभोक्ता द्रव्य को थोड़ी—थोड़ी मात्रा में व्यय करता है।
- 3— उपभोक्ता की आय, रुचि तथा अधिमान में कोई परिवर्तन नहीं होता।
- 4— उपयोगिता का द्रव्य के मापदण्ड द्वारा मापन संभव है।
- 5— वस्तु की कीमतें स्थिर व दी हुई हैं।

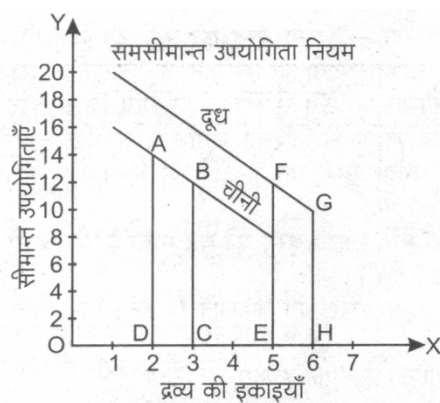
mnkgj .k , oa js[k kfp= }kjk fu; e dh 0; k[; k&

माना कि किसी व्यक्ति के पास द्रव्य की 8 इकाइयाँ हैं जिन्हें वह दो वस्तुओं दूध तथा चीनी पर व्यय करना चाहता है। व्यक्ति प्रत्येक वस्तु पर 1—1 रूपया करके व्यय करता है। दोनों वस्तुओं की विभिन्न इकाइयों से उसको निम्न तालिका के अनुसार उपयोगिता प्राप्त होती है—

n0; ¼: 0½dh bdkb; kW	nwk l s i klr mi ; kfxrk/bdkb; ka e½	phuh l s i klr mi ; kfxrk/bdkb; ka e½
1	20 (I)	16 (III)
2	18 (II)	14 (V)
3	16 (IV)	12 (VII)
4	14 (VI)	10
5	12 (VIII)	8
6	10	6
7	8	4
8	6	2

उपभोक्ता अपने रुपये को सबसे पहले सर्वाधिक उपयोगिता देने वाली वस्तु पर व्यय करेगा। सारणी में सर्वाधिक उपयोगिता 20 है जो दूध से प्राप्त हो रही है। अतः पहली इकाई द्रव्य से वह दूध प्राप्त करेगा। दूसरी इकाई पुनः दूध पर व्यय होगी, जिससे 18 इकाई की उपयोगिता प्राप्त हो रही है। तीसरी इकाई से उपभोक्ता को 16 इकाई की संतुष्टि प्राप्त हो रही है जो दूध तथा चीनी दोनों की इकाइयों से प्राप्त होने वाली उपयोगिता के बराबर है क्योंकि दोनों से समान उपयोगिता प्राप्त हो रही है। परंतु अभी तक उपभोक्ता ने चीनी की किसी भी इकाई का क्रय नहीं किया है, अतः वह तीसरी इकाई को चीनी प्राप्त करने पर व्यय करेगा तथा चौथी इकाई को पुनः दूध क्रय करने पर व्यय करेगा। इस प्रकार वस्तु से प्राप्त होने वाली उपयोगिता को देखते हुए उपभोक्ता अधिक उपयोगिता वाली वस्तु पर पहले व्यय करते हुए द्रव्य की अंतिम इकाई तक व्यय करेगा।

तालिका से स्पष्ट है कि दोनों वस्तुओं पर इसी क्रम में व्यय करते हुए दूध पर व्यय किये जाने वाले 5 रूपयों से 80 इकाई के बराबर तथा चीनी पर व्यय किये जाने वाले 3 रूपयों से 42 इकाई के बराबर उपयोगिता मिल रही है। द्रव्य की कुल 8 इकाइयों से 122 इकाई उपयोगिता प्राप्त हो रही है। यदि व्यय के क्रम में कोई भी परिवर्तन किया जाता है तो उपयोगिता की मात्रा कम हो जाती है।



रेखाचित्र में दूध और चीनी पर होने वाले व्यय से प्राप्त सीमान्त उपयोगिताओं को दर्शाने वाली दो अलग-अलग रेखायें प्रदर्शित की गई हैं। दूध पर 5 रूपयें व्यय करके सीमान्त उपयोगिता E F के समान है जबकि चीनी पर रूपये 3 व्यय करके सीमान्त उपयोगिता B C के बराबर है यहां B C तथा E F दोनों का मूल्य 12 इकाई उपयोगिता के समकक्ष है। इस प्रकार $BC = EF$ अर्थात् दोनों वस्तुओं से प्राप्त सीमान्त उपयोगिताएं समान हैं।

vfr y?kq mRrjh; i' u&

प्रश्न 1— उपयोगिता किसे कहते हैं?

प्रश्न 2— सीमान्त उपयोगिता का अर्थ बताइये?

प्रश्न 3— आय प्रभाव से क्या समझते हैं?

y?kq mRrjh; i' u&

प्रश्न 1— उपयोगिता की क्या विशेषताएँ/लक्षण हैं?

प्रश्न 2— सीमान्त उपयोगिता कितने प्रकार की होती है?

प्रश्न 3— सीमान्त उपयोगिता तथा कुल उपयोगिता में परस्पर सम्बन्ध बताइये?

प्रश्न 4— सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की क्या सीमाएँ हैं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—

प्रश्न 1— सीमान्त उपयोगिता तथा कुल उपयोगिता का अर्थ स्पष्ट कीजिए तथा रेखाचित्र की सहायता से इनके परस्पर सम्बन्धों की व्याख्या कीजिए?

प्रश्न 2— सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की उदाहरण एवं रेखाचित्र की सहायता से व्याख्या कीजिए?

प्रश्न 3— उदासीनता वक्र रेखाओं की सहायता से उपभोक्ता संतुलन पर आय प्रभाव को दर्शाइये?